06 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्वराज्य अधिकारी बन दासपन से मुक्त होने का अनुभव

➢➢ आत्म ज्ञान द्वारा मालिक बनना

➳ _ ➳ बाबा की कुटिया में बैठ मैं उनके चित्र को निहार रही हूं...

→ अपने भाग्य को सहारते हुए बिंदु बन बिंदु परमात्मा की याद में खो जाती हूं...

→ इस देह से दूर, देह भान से भी दूर, एकदम अशरीरी अवस्था को अनुभव कर रही हूं...

→ अभी तक ओर देह को ही अपना सब कुछ जाना और माना था पर आत्मज्ञान पा के देहभान से दूर होती जा रही हूं...

→ मालिकपन की अवस्था का अनुभव कर रही हूं...

■ मैं देह नहीं हूं, देही बन गयी हूं...

➳ _ ➳ देही बन कर्मेन्द्रियों के मकड़जाल से मुक्ति

→ मैं आत्मा मालिक हूं और ये कर्मेन्द्रियां मेरी कर्मचारी हैं...

→ ये जान कर मैं अपनी मालिक स्वयं बन गई हूं, अब आंख, कान, मुख मुझे धोखा नहीं दे सकते...

→ इन कर्मेन्द्रियों के जाल के एक एक तार को मैंने परमात्म ज्ञान से, मदद से काट डाला है...

→ मेरी सर्व कर्मेन्द्रियों की चंचलता समाप्त हो चली है, शीतल हो गयी हैं...

■ इन कर्मेन्द्रियों के शीतलता में आने से मैं मेहनत मुक्त आत्मा बनती जा रही हूं...

➢➢ बेहोशी से ईश्वरीय होश में आना

➳ _ ➳ मैं अब ईश्वरीय मर्यादाओं पर चलने वाली आत्मा हूं...

→ मनमर्जी को खत्म कर बाप की मर्जी पर चल रही हूं...

→ जो बाप की मर्जी वो मेरी भी मर्जी तो क्या क्यों कि क्यू समाप्त हो गयी है, सारी अर्जियां ख़त्म हो गई हैं...

→ अर्जी की फाइलों को समाप्त कर विशेष आत्मा बन सर्व की विशेषताओं को देखने लग गई हूं...

→ महान बाप की महान बच्ची हूं तो इस स्मृति में रह कर अपने हर कर्म, बोल व संकल्प को भी महान बना रही हूं...

■ बेहोशी के जाल से मुक्त, मेहनत से छूट कर मुझ आत्मा को अब रूहानी होश आया है...

➳ _ ➳ दास से अधिकारी आत्मा

→ देहभान था तो कर्मेन्द्रियों की दासी थी तो जीवन में उदासी भी थी...

→ अब परेशान ना हो आराम से शान में रहने वाली आत्मा हूं...

→ सदा स्वयं को आगे बढ़ाते हुए औरों को भी आगे बढ़ा रही हूं...

→ सबके गुण और विशेषताओं को स्वीकार कर फॉलो फ़ादर करने वाली आत्मा बन गयी हूं...

■ बाप की मर्जी को जान हर आत्मा प्रति सदा शुभचिंतक रहने वाली, शुभचिन्तन करने वाली आत्मा हूं...

■ स्व प्रति व विश्व प्रति कल्याणी आत्मा बन कार्य करती हूं...

■ दासत्व से मुक्ति पा सही अर्थों में अधिकारी आत्मा बन गयी हूं...

■ मन और तन से सदा हर्षित रहने वाली राजऋषि आत्मा बन गयी हूं...

■ सदा सिंहासन पर सेट, सदा मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूं।